जागरूकता

एक क्रांति

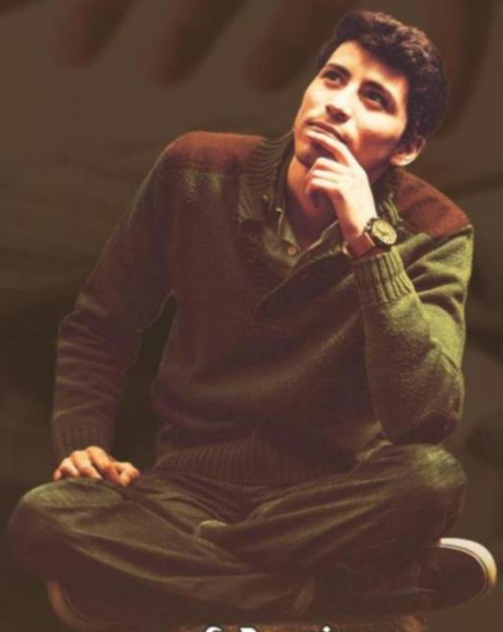

पुरुषार्थ देवाँगन

जागरुकता - एक क्रांति

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN:978-93-6026-418-5

Price: ₹ 235.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

जागरुकता

एक क्रांति

पुरुषार्थ देवाँगन

पुस्तक के बारे में

ऐसी बहुत सारी चीजे हैं, जो हमारे सामने होते हुए हम उसे देख नही सकते। हमें हर हिसाब गलत बताया जाता है, इसलिये आज लोगो को जनरल नॉलेज की नहीं जागने की जरुरत है। आज हम सब बहुत से राज जानेंगे जैसे यहाँ के सारे रिकॉर्ड्स, लोगो परेशानी, गलतियाँ कि क्या गलतियाँ हम में है, और क्या नहीं। आज यहाँ सारे रिकॉर्डस जो सरकार या बाकी सब लोग मानते है, वो धरी की धरी रह जायेगी। आज हम रिकॉर्डस या किसी चीज को सामान्य ज्ञान से नही, दिमाग से सोचेंगे, हर काम दिमाग से करेंगे, लेकिन दया भाव का होना बहुत जरुरी है, और आज कुछ नया जानने के लिये हमें पुरानी सभी गलत बात भूल जाना होगा। समाज की बहुत सी बुराईयाँ हैं, लोगो की बहुत सारी कमिया है, कुछ लोग यहाँ गरीब है तो कुछ के लिये पैसा ही सबकुछ है।

आज भारत और साथ ही कई देश के रिकार्ड्स से लोगो का अभिमान टूट जायेगा, लोग यहाँ पैसे को ही सब–कुछ मानते हैं, इसलिये हम भी कुछ चीजो का फैसला पैसे से ही करेंगे। लोगो के अभिमान को उन्ही पैसो की बर्बादी के तौर पर देखेंगे जिन पर उन्हे इतना घमण्ड है। हम हर चीज अलग ही नजर से देखते हैं, और हर एक चीजो की गलती दूसरे के ऊपर लगा देते

हैं। ऐसी बहुत सारी परेशानियाँ लोगो के साथ है और उसी के आधार पर हम इस अंधे और आँख वाले दोनो समाज व लोगो की वैल्यु देखेंगे। असल में ज्यादातर जानकारी भारत से ही क्यो? इसका सीधा और सच्चा–सा जवाब है, जो व्यक्ति जहाँ जन्म लेता है, उसे वहाँ से लगाव होता है, वहाँ से प्यार होता है, वो उनका घर है और हर इंसान की तरह कोई भी अपने घर को बर्बाद होते नही देख सकता। हमारा उद्देश्य यही है कि हम देश को बर्बाद होने से बचाये और ये भारत पर ही नही इसकी बहुत सारी बाते दुनिया के हर एक देश में लागू होती है। असल में हमारी माईंन्ड सेट हमारे माहौल के कारण हमने अलग कर रखी है, हमने हर चीजे अलग तरीके से सीखी है, लेकिन आज हम हर एक चीज का सही मूल्यांकन करेंगे, जिससे सारी बाते हमारी सामने आ सके, हमारा उद्देश्य किसी को चोट पहुँचाना नही सिर्फ सच्चाई सामने लाना है।

लेखक के बारे में

नामः– पुरुषार्थ देवाँगन

जन्मः– 19 नवम्बर 1995

जन्म स्थानः– छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले के एक बहुत ही छोटे गाँव "सुपेला" में मेरा जन्म हुआ।

शिक्षाः– वर्तमान में मैं एक मेकेनिकल इंजीनियरिंग स्टुडेंट हूँ, मैने मेरी स्कूल लाईफ की पढ़ाई में कुछ परेशानियो की वजह से 5th, 6th और 7th स्टैंडर में स्कूल ना के बराबर गया था। उस दौरान मुझे मेरें स्कूल, शिक्षको व दोस्तो द्वारा बहुत शर्मिंदी का सामना करना पड़ा था, लेकिन मैने अपनी मेहंनत से कुछ ही सालो में खुद को साबित कर दिया और इसी बीच 9th क्लास, 15 साल की उम्र से मैने खुद से कविता, कहानियाँ, समाज व देश के बारे में लिखना शुरु कर दिया, जिनमे से ये मेरी पहली किताब प्रकाशित हुई है। मैं उम्मीद करता हूँ कि आने वाले सालो में मेरे बाकी के सभी लेख प्रकाशित हो जाये।

मेरा संघर्षः– मैं बचपन से ही संघर्ष की लम्बी लड़ाई लड़ी जिसे बहुत ही कम लोग जानते हैं और मेरे अलावा शायद ही कोई समझे, क्योंकि मैं शुरु से बाकियो से बहुत अलग था। मैं 10 साल की उम्र में सही से बोलना सीखा उससे पहले मैं शब्दो का सही उच्चारण नही कर पाता था, मुझे बचपन में टी. वी. के सभी शख्स एक जैसे ही दिखते थे। आज भी मुझे ज्यादातर लोगो के एक जैसे नाम को लेकर मुझे बहुत परेशानी होती है और बहुत दिनो बाद अपने पुराने दोस्तो से मिलने पर उनकी भी शक्ले याद नही होती। मुझमे बहुत सारी कमजोरिया थी इसलिये मुझे हर एक चीजो के लिये सामान्य लोगो से ज्यादा मेहनत करनी पड़ती थी, लेकिन मैने

कभी भी अपनी कमजोरियो को सामने आने नही दिया, ना ही कभी हार माना और आखिरकार मैने मेरी कमजोरियो से बहुत लम्बी लड़ाई लड़ी और जीत हासिल की।

लक्ष्यः– मेरा लक्ष्य समाज व देश के लोगो को जागरुक करना है। मैं भी उन्ही पागलो में शामिल हूँ, जो हर चीज अलग नजरिये से देखते हैं और समाज की सभी बुराईयो को खत्म करने की कोशिश करते हैं। मैं चाहता हूँ कि मेरी इस किताब की बात भारत के सभी स्टुडेंट्स, लोगो व सरकार तक पहुँचे क्योंकि उन्हे बहुत सारी जानकारियाँ सामने होते हुए भी पता नहीं होता जैसे कि, "कोल्ड्रिंग जिसे बनने में 24 घन्टे का भी समय नही लगता है, वही 100 लीटर कोल्ड्रिंग 6000 रु. में मिलती है, जबकि अनाज ज्यादा जरुरी होते हुए भी ना जाने क्यो, किसानो द्वारा उगाये अनाज जिसे कम से कम 4 महिने का समय लगता है, उस 100 किलो अनाज का किसानो को 3000 रु. से भी कम दाम मिलते हैं।" इस तरह की जागरुकता लाना, देश की अर्थिक स्थिति सुधारना व देश को सशक्त बना ही मेरा मुख्य उद्देश्य है।

Dedicated
To
My Country

विषय – सूची

क्रं.	विषय	पृष्ठ क्रं.
1.	भिखारी (द बेगर)	01
2.	टैक्स (कर)	07
	■ गैर कानूनी तरीके से पैसे को कानूनन बनाना और टैक्स से बचना	08
	■ कुछ टैक्स की प्रक्रिया	09
3.	विदेशी बिजिनेस	12
	■ बहुत सारे प्रोडक्ट्स का भारत में बनना और लोगो का अंजान रहना –	18
4.	द बिजिनेस वे	20
	■ द चीट फन्ड कम्पनी	20
	■ ॲवर एजुकेशन रिलेटस बिजिनेस	23
	■ द जैकपॉट बिजिनेस	26
	■ बेरोजगारी से नेटवर्किंग बिजिनेस तक	28
5.	जतिवाद	35
	■ जाति, गोत्र का गठन और इतिहास	38
6.	हमारा एजुकेशन	41
7.	घुसपैठ (द इन्ट्रूडर)	50
8.	आस्था से ईश्वर तक	53

9. द पॉलिटिक्स 62
10. अ सिनेमा कॉस्ट 68
11. हमारी वर्तमान स्टैटस और सोच (द प्रेजेन्ट स्टैटस एन्ड थिंकिग) 71
- हमारी वर्तमान सोच – 74
12. द सोशल 78
13. द टेकनिकल वर्ड्स 86
14. चिकित्सा पध्दति (द मेडिकेयर) 90
15. दी एक्सीलेंस 99
- मीडियास रिलेट एक्सीलेंस 102
- टैलेंट इस एक्सिलेंस 104
- निलामी (द ऑक्सन) 105
16. भ्रष्टाचार (द करप्पशन) 107
17. कृषि, किसान और मंहगाई 124
- किसानो का आत्महत्या को प्रेरित होने का कारण– 129
18. रोजगार (द एम्प्लॉयमेन्ट) 131
- सरकारी नौकरी 132
19. संगठन (द यूनिटी) 136

भिखारी (द बेगर)

भिखारी नाम से ही, हमारा दिमाग गरीबी को ही याद करता है और हर व्यक्ति करुणा और दया से भर जाता है, लेकिन ये किस हद तक सही है इस बात से भारत देश और समाज दोनो ही अंजान है, यहाँ आपको बहुत से जवान भिखारी भी मिल जायेंगे क्या हमने कभी सोचा वो काम क्यो नही करना चाहते? क्यो वे बिना डरे व शर्म किये भीख माँग रहे हैं? उनका गुजारा कैसे चलता होगा? ऐसे बहुत सारे सवाल हमारे दिमाग में दौड़ते हैं, लेकिन कभी–कभी यह भीख माँगना समाज के ऊपर हावी हो जाता है। हमें हर उस शख्स की मदद करनी चाहिये, जिनको हमारी जरुरत है, लेकिन हमारी इन्ही आदतो की वजह से कुछ लोग हमारा फायदा उठा रहे हैं, कुछ हद तक इसमे हमारी भी गलती है। दया और करुणा बहुत जरुरी है, लेकिन आज एक बार दिल से नही दिमाग से काम लेंगे और हमारे बीच समाज में उपस्थित ऐसे लोग जो भिखारी बनकर हमें लूट रहे हैं, जो कि खुद आसानी से मेहनत कर कमा सकते हैं, ऐसे ही लुटेरो के बारे में पूरी तरह छानबीन करेंगे, कि उन्हे भीख माँगना क्यो अच्छा लगता है व बहुत से भिखारी आज कैसे करोड़पति व लखपति हो गये हैं।

भीख माँगना अब एक बिजिनेस हो गया है हम कुछ लोगो की मजबूरी का मजाक नही उड़ा रहे है, जो कोई

भी इसे बिजिनेस की तरह कर रहे हैं, सिर्फ उनकी यहाँ बात हो रही है। भारत के तकरीबन 80,000 भिखारी पढ़े लिखे हैं फिर भी वे भीख क्यो माँग रहे हैं? या यूँ कहे हमने इन्हे पैसे देकर आदत बना ली है। शायद ये लोगो की ही गलती है जो पैसे देने को ही दान मानते हैं। इन्हे अगर कुछ देना ही है तो खाने पीने की चीजे दे या उससे ज्यादा पहनने को कपडे दे, तो ज्यादा बेहतर होगा। धन दान देना सभी जहगो पर महत्व नही रखती, जैसे कि जब आप गाय या चींटियो या किसी भी जानवरो पर रहम कर उन्हे 500 रु. का नोट क्यो ना दे दे। तब उस समय आपके उस दान का क्या महत्व रह जायेगा।

अब बात ऐसे ही लुटेरो की करे, तो आपने सुना ही होगा कुछ भिखारी करोड़पति या लखपति है। ये लोग बस, ट्रेन, बड़े शहरो के ट्रैफिक सिग्नल्स में आराम से मिल जायेंगे। कुछ तो स्कूल और कॉलेज वाली जगहो में भी भीख माँगने चले जाते हैं। चलिये कुछ लोग जो बिजिनेस की तरह इसे करते हैं हम उनके बारे में जानते हैं। वे एक दिन में 100 घरो में जाते हैं या रात तक अपनी काम करे तो 500 घरो में जाते हैं और अपनी व्यथा सुनाते हैं, कि उन्हे बीमारी हैं, वो भुखे हैं, उन्हे परेशानी है। पर्ची वगैरह छपवा कर या त्यौहारो में कहते हैं कि भगवान की पूजा करनी हैं या आज सोमवार हैं, कुछ तो अंधे व लंगड़े और ना जाने क्या–क्या बनने का ढोंग करते हैं। ये ऐसे तरह–तरह कि बहाने बनाने लगते हैं और बड़े शहरो में हर एक से 20 रुपये ले लेते हैं यानि कैल्कुलेशन किया जाये तो .....

1 भिखारी = 500 (लोग) x 20 (रुपीस) = 10,000 रु.अब जमाना बदल चुका है 1–2 रु. शायद ही कोइ भिखारी लेता हैं और भारत मे इतनी जनसंख्या है कि एक दिन में 500 लोग भी आराम से मिल जाते है, महिने के हिसाब से देखा जाये तो ,

= 10,000 रु (1 दिन का) x 30 (दिन)

= 3,00,000 रु. महिने (3 लाख रु.)

इतना पैसा बहुत से मेहनत करने वाले लोग चाहे वह टीचर, मजदूर, किसान या एक अधिकारी या एक छोटे बिजिनेस करने वाले यहाँ तक कि भारत के पी.एम. की भी सैलरी इतनी नहीं है। इनकी भीख माँगने से कोई परेशानी नही हैं लेकिन ये कुछ लोग जो शरीर से सक्षम होते हुए भी, थोड़े से हाथ–पैर की खराबी के चलते भीख मांगते हैं। कुछ तो होशियार भिखारी भी हैं, जो 5 मिनट से भी कम समय में भी भीख लेने में कामयाब हो जाते हैं, इसलिये एक दिन में ये लोग खासकर पर्व में 1 दिन में 500 लोगो से भीख माँगने में कामयाब हो जाते हैं, अगर ऐसे ही भिखारियो की संख्या 50,000 हो तो, इन 50,000 भिखारियो की 1 दिन की कमाई –

= 10,000 रु. (एक्सपर्ट भिखारी की 1 दिन की कमाई) x 50,000 (भिखारी)

= 50,00,00,000 रु. (50 करोड़ एक दिन का)

अगर महिनो मे देखा जाये तो इन 50,000 भिखारियो की कमाई

= 50,00,00,000 रु. x 30 दिन

= 15,00,00,00,000 रु. (15,00 करोड़ प्रति माह)

जागरुकता

"All power is within you; you can do anything and everything. Believe in that, do not believe that you are weak; do not believe that you are half-crazy lunatics, as most of us do nowadays. You can do anything and everything, without even the guidance of any one. Stand up and express the divinity within you."

— Swami Vivekananda, Lectures from Colombo to Almora

You may reach author at:
dpurusharth@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-93-6026-418-5
9 789360 264185